''सूरजपाल चौहान के साहित्य में दलित चेतना''

दयालबाग़ एजूकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा, की पी–एच०डी० (हिन्दी) की
उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध विषय की प्रस्तावित
रूपरेखा एवं उद्देश्य
सन्–2017

निर्देशिका | **शोधार्थिनी**

(श्रीमती) डॉ0 सुमन शर्मा
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग

नीतू कुमारी

हिन्दी विभागाध्यक्षा

प्रो0 शर्मिला सक्सेना

कला संकाय प्रमुख

प्रो0 जे0 के0 वर्मा

दयालबाग़ एजुकेशनल इस्टीट्यूट डीम्ड यूनिवर्सिटी
दयालबाग़, आगरा – 282005

"सूरजपाल चौहान के साहित्य में दलित चेतना"

दलित साहित्य घृणा, बंधुआ जीवन, भेदभाव छुआ–छुत, कर्मकांड रूढ़िवाादिता और ब्राह्मणवाद के खिलाफ खुला विद्रोह है। आज समाज और राजनीति में जो हलचल उठी हुई है, वह किसी न किसी रूप में साहित्य की विविध विधाओं में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में तनाव निर्माण करती है और उसके अनुसार लेखन की दिशा बनती है। पिछले कुछ वर्षो से मराठी में दलित साहित्य का विकास बहुत अधिक मात्रा में हुआ है। इस साहित्य का प्रभाव आज भारत की लगभग सभी भाषाओं में दृष्टि गोचर होता है। इसी के परिणाम स्वरूप साहित्य जगत में दलित चेतना, दलित आन्दोलन दलित साहित्य के संदर्भ में विद्वानों आलोचकों, पाठकों, साहित्यकारों और सामाजिक चिन्तकों को ध्यान इस साहित्य ने आकर्षित किया हुआ दिखाई देता है। इन विषयों के संदर्भ में और दलित चेतना के बारे में बहुत सारे विद्वान कुछ सहमत है तो कुछ असहमत है। फिर भी इसका प्रभाव समाज पर पड़ता हुआ दिखाई देता है इसी के परिणाम स्वरूप 'दलित चेतना' साहित्य की विभिन्न विधाओं में अभिव्यक्त हुई है और हो रही है। इसके साथ ही सामाजिक राजनैतिक परिप्रेक्ष्य में दलित साहित्य ने अपना विशेष महत्व प्रतिपादित किया है। इसीलिए 'दलित चेतना' एक प्रतिबद्ध लेखन और सशक्त आन्दोलन बन गया है। "दलित चेतना और दलित साहित्य स्वर्ण मानसिकता और दलित विरोध गतिविधियों के प्रतिरोध का साहित्य है। यह दलितों और दलित चेतना से जुड़े रचनाकारों का एक सृजनात्मक प्रयास है। "दलित शब्द समाज के सबसे निम्न स्तर पर जीवन–यापन के लिए विवश कर दी गई उपेक्षित जाति के लिए प्रचलित है। इन जातियों के विशाल जन–समूह की व्यथाओं और वेदनाओं के कारण लिखा गया साहित्य ही व्यापक अर्थ में दलित साहित्य की कोटी में आता है। वह व्यापक जन समूह जो सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक आदि स्तरों पर निरंतर कुचला गया है, उस सम्पूर्ण वर्ग का प्रवक्ता दलित साहित्य है।"

सूरजपाल चौहान का जीवन परिचयः–

सूरजपाल चौहान का जन्म 20 अप्रैल 1955 को उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के "फुसावली" नामक गॉव में एक बहुत गरीब दलित परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम श्री रोहनलाल तथा माता का नाम आशफिया देवी था। पिता रेलवे स्टेशन पर मजदूरी करते थे एवं इनकी माँ सारा दिन ठाकुरों के यहाँ काम करती और सही से देख भाल न होने पर माँ की मृत्यु के पश्चात् रोहन लाल इन्हें अपने साथ ले आये। सूरजपाल चौहान ने बी0ए0 तक शिक्षा प्राप्त की है। खान मार्केट में नई दिल्ली नगर निगम प्राथमिक विद्यालय से इन्होंने पॉचवी कक्षा उत्तीर्ण की। दीवान चंद आर्य हायर सेकेंडरी स्कूल लोदी रोड, नई दिल्ली में सन् 1974 में हायर सेक्रेण्डरी की परीक्षा उत्तीर्ण की दिल्ली के 1974 में हायर सेक्रेण्डी की परीक्षा उत्तीर्ण की दिल्ली के भगत सिंह

कॉलेज (संस्था) से उन्होंने बी0ए0 की उपाधि ग्रहण की। सूरजपाल चौहान स्कूल के समय से ही "नुक्कड़ कवितायें" लिखने लगे थे लेकिन दलित साहित्य केलेखन की प्रेरणा डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर का साहित्य पढ़कर ही हुई। सूरजपाल चौहान जी का कृतित्व इस प्रकार है– प्रथम कविता संग्रह–प्रयास (1994), क्यों विश्वास करूँ (2004) कहानी संग्रह ये है– हैरी कब आयेगा (1999), नया ब्राहम्मण (2009) 'धोखा' (2011), आत्मकथा– तिरस्कृत (2002) संतप्त (2006) और जीवनी मातादीन (2007) लघु नाटिका 'छू नहीं सकता' (2000) में प्रकाशित हुई है, इसमें दलित समस्याओं को स्पष्ट तर्कपूर्ण और रूचिकर ढंग से प्रस्तुत किया गया हैं अन्य साहित्य– सूरजपाल चौहान ने इन विधाओं के अतिरिक्त 'बच्चे सच्चे किस्से' बाल मधुर गीत' जैसी कविताओं के अतिरिक्त लघुकथाएँ, कथा संस्मरण एवं कई चिंतन लेख विभिन्न दैनिक समाचार पत्रों एवं पत्रिकाओं में छपते रहते हैं अनेकों पुस्तकों का सम्पादन भी किया है।

अन्य लेखकों के समान सूरज पाल चौहान हिन्दी साहित्य के उन गिने–चुने नामों में से एक हैं जिन्होंने दलित साहित्य के शुरूआती दौर से अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करायी हैं। इस मामले में वह इकलौते दलित साहित्यकार हैं जिन्होंने साहित्य की लगभग सभी लोकप्रिय विधाओं में अनवरत रूप में लिखा है उनकी हर रचना सच और समाज के इतने करीब होती है मानो किसी घटना की कमेन्ट्री हो समाज का यह सच है कि वह बिना किसी लाग–लपेट या मिलावट के परोसते हैं। बाबजूत इसके, कलात्मकता एवं लयता उनकी रचनाओं में देखतेही बनती है। सच के पक्ष में सदैव खड़े दिखाई देते हैं और यह सच किसी को नहीं छोड़ता है फिर वह चाहे भंगी, (किसी जाति) चमार, पासी, खटीक, बेलदार समाज से ही क्यों न हो। गलत बात पर तो वह बौद्धों को भी घेर लेते है। "यह दलितों की बस्ती है' उदाहरण के लिए ऊँची और महत्वपूर्ण रचना है। यही एक रचना उनकी सोच, विद्रोह और षडयंत्र को परिभाषित करने के लिए पर्याप्त है।

सूरजपाल चौहान के व्यक्तित्व की एक विशेषता यह है कि वे जैसे हैं, वैसा ही साोचते है और जैसासोचतें हैं वैसा ही लिखते भी हैं इसलिए वह बिना मुखौटा या आवरण के हर स्थान पर एक से ही है। समझौता न करने वाले, अपनी मनुष्यता के मूल्यों के साथ जीने वाले चाहे भले ही इसमें कठिनाई कितनी ही आए। इसलिए उनके साहित्य को पढ़ना अनुभव से गुजरने जैसा ही होता है।

शोध का उद्देश्य :–

दलित साहित्यकार सूरजपाल चौहान के साहित्य में 'दलित चेतना' पर शोध करने का मेरा उद्देश्य है हजारों सालों से चली आ रही हिन्दू धर्म परम्पराओं में दलित अस्मिता का स्थान निर्धारित करना और दलितों के साथ हुऐ अन्याय, अत्याचार छुआ छूत, असमानता, समाज में

व्याप्त कुरीतियों, सवर्णो द्वारा किया गया शोषण व दलितों में किस प्रकार शोषण के विरूद्ध चेतना जाग्रत हुयी है, इन सब पहलुओं को समझने का प्रयास एवं दलित साहित्य के माध्यम से समाज में समन्वय स्थापित करना और दलितों एवं सवर्णो के बीच सदियों से चली आ रही जातिगत समस्या का डॉ0 बाबा साहब अम्बेडकर की वैचाारिक दृष्टि से समाधान करना मेरे शोध का अहम् उद्देश्य एवं आवश्यकता हैं। इस प्रकार मेरे शोध कार्य से समाज को एक नई दृष्टि मिलेगी।

अनुसंधान की प्रविधिः—

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। मनुष्य होने के कारण वह खोज करता रहता है। साहित्य के क्षेत्र में शोध करते समय अनुसंधान पद्वति का प्रयोग किया जाता हैं मैंने "सूरजपाल चौहान के साहित्य में दलित चेतना" में वर्णात्मक और विवेचनात्मक अनुसंधान पद्वतियों का शोध केसमय प्रयोग किया जायेगा। साथ ही पत्र—पत्रिकाओं को भी अध्ययन का विषय बनाया जायेगा।

शोध पूर्व कार्यविवरणः—साहित्य सर्वेक्षण में शोध विषय में संबंधित जानकारी विभिन्न विश्व—विद्यालयों के पुस्तकालयों से प्राप्त की गयी है।

जिसका विवरण निम्नवत है।

1— सूरजपाल चौहान के साहित्य में दलित विमर्श— 2011

2— प्रेमचन्द्र के साहित्य में दलित चेतना के स्वरूप"— 2007

कार्य की मौलिकता :—

"सूरजपाल चौहान के साहित्य मे दलित चेतना" पर अभी तक कोई भी शोध कार्य नहीं हुआ है। मेरा यह शोध कार्य पूर्णतः मौलिक एवं नवीन हैं। शोध और समीक्षा के क्षेत्र में प्रस्तुत शोध—प्रबन्ध संतुलित दृष्टि का प्रयास मात्र रहेगा। मेरे शोध के द्वारा साहित्य एवं समाज को एक नवीन विचारधारा देने का एक नगग्य प्रयास भर होगा।

अनुसंधित्सु

नीतू कुमारी

"सूरजपाल चौहान के साहित्य मे दलित चेतना"

प्रथम अध्याय–

(क)– दलित साहित्य : अवधारणा और वैचारिकी

(ख)–दलित साहित्य का विकास क्रम

(ग)– दलित चेतना : एक विवेचन

द्वितीय अध्याय–

सूरजपाल चौहानः व्यक्तित्व एवं कृतित्व

(क)– व्यक्तित्व

(ख)– कृतित्व

तृतीय आध्याय–

सूरजपाल चौहान की कहानियों में दलित चेतना :–

(क)– दलित कहानियों का विकास

(ख)– सामाजिक शोषण का यथार्थ चित्रण

(ग)–आर्थिक विषमताओं का चित्रण

(घ)– धार्मिक चेतना के प्रति विद्रोह

(ङ)– स्त्री अस्मिता की तलाश

चतुर्थ अध्याय :–

सूरजपाल चौहान का काव्य–साहित्य और दलित स्वर।

(क)– कविताओं में विद्रोही स्वर

(ख)– जातीय अस्मिता

(ग)– अस्मितावादी अभिव्यक्ति

(घ)– कविताओं का सौन्दर्य एवं शिल्पगत अध्ययन

पंचम अध्याय :–

आत्मकथा और जीवनी का विवेचन :–

(क)– संघर्ष से उपजी जीवन दृष्टि

(ख)– सामाजिक ताना–बाना और शोषण की वैधानिकता के विरूद्ध चेतना जागृति।

(ग)– सूरजपाल चौहान के साहित्य में सौन्दर्य दृष्टि

उपसंहार

परिशिष्ट

1–आधार ग्रन्थ

2– संदर्भ ग्रन्थ

3– कोश

4– विश्वकोश

5– पत्र एवं पत्रिकाएँ

6– साक्षात्कार / प्रश्नावली

7– वेबसाइट्स

आधार ग्रन्थ लेखक:–

1– तिरस्कृत, सूरजपाल चौहान, अनुभव प्रकाशन, दिल्ली, 2005

2– संतप्त, सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन, 2006

3– प्रयास, सूरजपाल चौहान, जागृति प्रकाशन, नोएडा, उ0 प्र0

4– क्यों विश्वास करूँ, सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

5– वह दिन जरूर आएगा, सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014

6– कब होगी वह भोर, सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2007

7– हैरी कब आयेगा, सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1999

8– नया ब्राहम्मण, सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, 2009

9– धोखा, सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

10– महानदलित, सूरजपाल चौहान, सम्यक प्रकाशन 2016

11– मातादीन, क्रान्तिकारी योद्धा सूरजपाल चौहान, सम्यक प्रकाशन

12– मधुर बालागीत, सूरजपाल चौहान, मधुर प्रकाशन

13–छू–नहीं सकता, सूरजपाल चौहान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2000

सहायक ग्रन्थ

1– दलित चेतना की कहानियाँ, डॉ0 राम चन्द्र, डॉ0 प्रवीन कुमार

2–दलित साहित्य की वैचारिक पृष्ठभूमि, डॉ0 जर्नादन वाघगारेशिवालिक प्रकाशन

3–डॉ0 अम्बेडकर एक प्रखर विद्रोही, डी आर जाटव

4– दलित साहित्य समग्र परिदृश्य, डॉ0 मनोहर भंडारे

5– दलित चेतना की पहचान, डॉ0 सूर्यनारायण रणभमे

6– दलित साहित्य के प्रतिमान, डॉ0 एन0 सिह वाणी प्रकाशन

7– भारतीय दलित साहित्यः परिपेक्ष्य, पुन्नी सिंह कमला प्रसाद वाणी प्रकाशन

8–वाल्मीकि, अम्बेडकरी समाज के कथाकारों की चर्चित कहानियाँ ंपादन–सूरजपाल

चौहान।अनुभव प्रकाशन, 2017

9– हिन्दी दलित साहित्य की विविध विधायें, रश्मि चतुर्वेदी सरस्वती प्रकाशन बौद्व नगर, नौबस्ता

10–दलित साहित्य समग्र परिदृश्य, डॉ0 मनोहर भडारे–स्वराज प्रकाशन नई दिल्ली

11– दलित साहित्य की विकसित कलात्मकता, अमित कुमार – अनुभव प्रकाशन 2017

12– दलित अवधारणा एवं ओम प्रकाश वाल्मीकि का साहित्य, डॉ0 पाडुरंग वैजनाथ महालिंगे–वाणी प्रकाशन

13– सन्त साहित्य में दलित चेतना, डॉ हुकम सिंह–निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स 2014

14– दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, राधा कृष्ण प्रकाशन ओम प्रकाश वाल्मीकि 2005

15–दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र संस्करण, शरण कुमार लिंबाले – नयी दिल्ली वाणी प्रकाशन–2005

16– सत्ता संस्कृति और दलित सौन्दर्यशास्त्र, सूरजबडत्या, अनामिका प्रकाशन 2009